. मिनी कविता
****

मातृदिवस
"""""""""""""""""

माँ!
तथाकथित अइ विशेष अवसरपर
हमहूँ करितहुँ स्मरण आइ...
मुदा की करू
ताइ लेल तँ आन दिन
जरूरी छल बिसरनाइ।

अस्तित्व
"""""""""""""""

सुख-दु:ख
ऐब-जैब
ताइ सँ के बाँचल अछि?
जा छी
ता 'छी'
किछु कहबा ले' छी
---पोथीमे सैह बाँचल अछि।

प्रतिक्रिया
"""""""""""""""

अहाँ लिखै छी
तेँ ने नीक-बेजाय लोककेँ लगै छै,
तेँ ने कहैए।
हमरा से नइँ होइए
तँ कहाँ क्यो किछु कहैए?
मुख्य बात छै --- कहओ।
बुझब तँ सभकेँ अपन-अपन छै।